विशाल संगठन के एकता की सूत्रधार दादी प्रकाशमणि

दादी जी साथ दीदी मनमोहिनी जी।

दादी केवल आदेश नहीं देती थी बल्कि खुद साथ रहकर सहयोग देती थी

ब्र.कु.मोहिनी

कभी दादी जी ने किसी को उलाहना नहीं दिया, हमेशा प्यार की भासना दी। कभी यह नहीं कहा कि मेरे पास समय नहीं है। बाबा के नियम, धारणाओं पर पक्की होकर चलती थीं। सारा दिन दादी योगयुक्त अवस्था में रहकर कारोबार में व्यस्त रहती थीं। दादी आदेश देकर चली जाएं, ऐसा कभी नहीं हुआ। हम कहते थे, दादी, आप जाओ, हम कर लेंगे, पर दादी कहती थीं, आप सेवा कर रहे हो,मुझे नींद ही नहीं आती है। बाबा मुझे सोने नहीं देता है। कहता है, जाओ बच्चे सेवा कर रहे हैं। बैठेंगी, उमंग-उत्साह दिलायेंगी, टोली खिलायेंगी, पर ऐसे ही छोड़ कर नहीं जायेंगी। जब ओम् शांति भवन बन रहा था तो सामने जंगल था, छोटी-छोटी पहाड़ियां थीं। जब पत्थर तोड़े जाते थे तो रात में सभी भाई-बहनों को लेकर दादी स्वयं जाती थीं और पत्थर उठाती थीं। दादी स्वयं भी उठाती थीं। हम कहते थे, दादी बैठ जाओ, पर वो बैठती नहीं थी, दो-चार पत्थर ज़रूर उठाती थीं। सारी रात हमारे साथ बैठी रहती थीं। करती भी थीं और कराती भी थीं। ओम् शान्ति भवन की एक-एक ईंट में दादी की भावनाएँ समाई हुई हैं।

दादी के सामीप्य में थकान की अविद्या होती थी

ब्र.कु.मुन्नी

दादी जी के अंग-संग रहने के कारण किसी भी योग्यता में पारंगत होने के लिए मुझे कोई खास मेहनत नहीं करनी पड़ी। जैसे पारस के संग रहकर लोहा भी पारस बन जाता है, ऐसे दादी जी के संग रहकर मैं भी योग्य बन गई। सुबह से सायंकाल तक की व्यस्त दिनचर्या में सैकड़ों बार उनके सम्मुख जाना होता, उनकी प्यार भरी दृष्टि पड़ती और मेरे अंदर उमंग-उत्साह लहरें मारने लगता। उनके सामीप्य में थकान किसे कहते हैं, मैंने नहीं जाना। मुझे महसूस होता रहा कि ये नज़रें दादी जी की नहीं, स्वयं भगवान की हैं, जो मुझे निहाल कर रही हैं। उनके स्पर्श मात्र से दिव्य शक्ति का मुझमें संचार होता था। ओम् शांति भवन, ज्ञान सरोवर, शान्तिवन आदि सभी यज्ञ के बड़े-बड़े भवनों को सजाने-संवारने का पूरा प्रबंध दादी जी ने मुझे सिखाया। दादी जी ख़रीददारी की चीज़ें खुद बैठकर लिखवाती थीं। दादी जी की हर आज्ञा को साकार करने में मैं दिल से जुट जाती थी, मुझे बहुत खुशी मिलती थी।

दादी जी बहुत ही रहमदिल और ममता की मूरत थीं। दादी जी कभी कोई बात चित्त पर नहीं रखती थीं। मैं छोटी थी, जब कोई गलती कर देती थी तो दादी बहुत प्रेम से समझाती थीं। क्षमा का सागर थीं, हर गलती को भुला कर प्रेम से आगे बढ़ाती थीं। दादी जी स्वयं सदा सन्तुष्ट रहती थीं और उनके बोल थे, सभी यज्ञ-वत्स सदा खुश और सन्तुष्ट रहने चाहिए। किसी को कुछ भी चाहिए तो बाबा के भण्डारे से उसे अवश्य मिलना चाहिए, यह उनकी भावना होती थी।

दादी के हर कार्य में रचनात्मकता दिखाई दी

ब्र.कु.निर्वैर

दादीजी हम सबको सदा यही स्मृति दिलाती कि हम सभी भाई-बहनें परमपिता परमात्मा के सतयुगी सृष्टि स्थापन के कार्य को श्रीमत् अनुसार आगे बढ़ाने के निमित्त हैं, जिसका हमें बहुत गौरव होना चाहिए। संगठन के हर सदस्य के गुण व विशेषताओं को ध्यान में रखकर, हरेक के भिन्न-भिन्न विचारों को समन्वय करने पर बल देती थीं। एक-दो के विचारों को सम्मान देने के फलस्वरूप वो संगठन को आपसी स्नेह और एकता के सूत्र में बांध देती थीं। वर्तमान पुरुषोत्तम संगमयुग के अमूल्य समय को व्यर्थ न गंवाकर इसे रचनात्मक कार्यों में लगाने की प्रेरणा दादीजी देती थीं और सदा इस बात का ध्यान रखती थीं कि समय और शक्ति व्यर्थ न जाये क्योंकि इन शक्तियों के कारण ही संगठन सुचारू रूप से चलता है। दादीजी सर्व आत्माओं की सूक्ष्म आत्मिक शक्ति के विकास तथा उसके संगठित प्रयोग से असंभव को भी संभव करने पर बल देती थीं। जिसके लिए समय प्रति समय अखण्ड योग तपस्या (भट्ठी) के विशेष कार्यक्रम आयोजित करवाती थीं।

दादी में असम्भव को संभव करने की शक्ति थी

ब्र.कु.मृत्युंजय

दादी जी के संकल्प में इतनी शक्ति होती थी कि असंभव कार्य भी संभव हो जाता था। एक बार जब दादी बेंगलुरू आईं तो उन्होंने कहा कि विधानसभा के बेंक्वेट हॉल में हमारा एक कार्यक्रम होना चाहिए। वहाँ एक सम्मेलन का प्रबंध करो। उन दिनों वह हॉल किसी भी गैर सरकारी संस्था को नहीं दिया जाता था तो हमने दादी जी से कहा कि वे प्राइवेट संस्थाओं को वह हॉल नहीं देते। दादी जी ने कहा कि आप हिम्मत करो, प्रयत्न करो। बाबा बैठा है, मुख्यमंत्री से मिलो, संबंधित अधिकारियों, सचिवों से मिलो, काम हो जायेगा। बच्चों का एक कदम और बाबा के हज़ार कदम। ऐसे कहकर हम सब भाई-बहनों में उन्होंने उमंग भरा और हम सबने मिलकर ऐसा ही किया। मुख्यमंत्री और संबंधित अधिकारियों से मिलकर वह हॉल ले लिया और बहुत बड़े रूप में प्रोग्राम वहाँ किया। कार्यक्रम बहुत सफल रहा। उन दिनों ईश्वरीय इतिहास में यह एक विशेष प्रसंग था, यादगार घटना थी। उस सम्मेलन में केन्द्र सरकार और राज्य सरकार के अनेक मंत्री तथा लोगों ने भाग लिया था। इस सम्मेलन की सफलता का श्रेय आदरणीया दादी जी को जाता है।

बाबा का संदेश विश्व के कोने-कोने तक पहुंचाने की लगन थी

दादी सदा कहती थी मीडिया वाले शिवबाबा के राईट हैंड हैं। इन्हीं द्वारा सारे विश्व में ईश्वरीय संदेश पहुंचेगा। मीडिया वाले जब भी व्यक्तिगत रूप से या कॉन्फ्रेंस में आते थे तो दादी सबसे मिलती थी और आध्यात्मिक ज्ञान के बारे में उमंग-उत्साह दिलाती थी। आज भी वे जब यहां आते हैं तो दादीजी की उन स्मृतियों को याद करना नहीं भूलते। दादी जी का हंसमुख चेहरा व निश्छल स्नेह भरा व्यवहार आज भी वे भूला नहीं पाये हैं। कईयों को तो उनकी याद आते ही आँखें नम हो जाती हैं। दादी जी का उमंग सदा रहता था कि बाबा का संदेश सारे विश्व में पहुंचे। उसके लिए उन्होंने विश्व भर से 10,000 मीडिया वालों को बुलाने का संकल्प व्यक्त किया और उनका प्रबंध यहां करेंगे ऐसा वह सदा उत्साह दिखाती थी। उस समय भारत में सिर्फ दूरदर्शन चैनल था जिसमें धर्म-आध्यात्मिकता के लिए समय नहीं देते थे। पहले-पहले 'जी. टी.वी.' की सेवा शुरू हुई। उस समय बाबा का संदेश देने के लिए समय दिया गया । यह सुनकर दादीजी बहुत खुश हुई। और कहा कि शीलू बहन को ले जाओ। अर्थात् टी.वी. द्वारा ईश्वरीय सेवा का प्रारंभ दादीजी के समय से ही प्रारंभ हो गया था। जो आज सारे विश्व में पहुंच गया है। उनके संकल्प के बदौलत ही आज बाबा का 'पीस ऑफ माइंड' चैनल उपलब्ध हुआ।

ब्र.कु.करुणा

सेवा के विस्तार को देख दादी जी ने सर्व सेवा साथियों के बीच यह संकल्प रखा कि इन सेवाओं के समाचार से सभी लोगों को अवगत कराने के लिए एक अपना 'न्यूज पेपर' होना चाहिए। जो कि हर सप्ताह में सभी को मिल सके। तब सबकी राय से पंद्रह दिन में एक बार 'ओम शांति मीडिया' निकालने का निर्णय लिया गया। जो आज बाबा का संदेश विश्व के हर कोने में पहुंचा रहा है। यह सेवा दादी जी के होते ही वर्ष 1999 में शुरू हो गई थी।

किसी ने उन्हें एक कुशल प्रशासक के रूप में देखा तो किसी ने प्यार की मूर्ति के रूप में, किसी ने इस धरा पर अवतरित फरिश्ते के रूप में तो किसी ने उनके जीवन में कला और गुणों की खुशबू का अनुभव किया तो किसी ने सहारे का। दादी का व्यक्तित्व चुम्बकीय था। उनसे हर कोई सहजता से मिलता। सभी को उमंग उत्साह दिलाना, आगे बढ़ाना, सिखाना यह सब नेचुरल उनके जीवन का प्रवाह बन कर रहा। ऐसी महान आत्मा की छठवीं पुण्यतिथि पर संस्था के वरिष्ठ भाई-बहनों के दादीजी के साथ ईश्वरीय सेवा में बिताए हुए अनमोल लम्हों का अनुभव ...

सत्यता की शक्ति से सम्पन्न

दादीजी में कमाल का बैलेन्स था। कोई भी बात होती थी तो समेटने के समय उसको समेट लेती थी और जब सामना करने की बात होती थी तो सामना भी करती थी। वे निर्णय लेने में देरी नहीं करती थी। सत्यता व पवित्रता की शक्ति होने के कारण उनमें निर्णय शक्ति बहुत प्रबल थी। निर्भयता से निर्णय लेती थीं किसी भी बात का उन्हें भय नहीं होता था। वे सभी को समान दृष्टि से देखती थीं उनमें पक्षपात की भावना नहीं थी। जो सत्य बात होती थी उसे वो कह देती थीं। सामने वाला चाहे कितना भी बड़ा व्यक्ति हो, चाहे वो कोई संत हो, महामण्डलेश्र हो, राष्ट्रपति हो या प्रधानमंत्री हो लेकिन दादी ऐसे बात करती थी जैसे वो उनकी छोटी बहन हैं, एकदम दादीजी निर्मानता व निरहंकारिता की मूरत दिखाई देती थीं। इसलिए जो भी उनके सामने आता था वो उनके निर्मल व निश्छल स्वभाव से प्रभावित हुए बिना नहीं रह पाता था। दादीजी हमें भी अपनी सखी की तरह समझती थी और व्यवहार में आती थी। मैं दादी बृजेन्द्रा के साथ रहती थी। उनकी तबियत ठीक न होने के कारण मुझे ही सभी कार्य के लिए बाहर जाना पड़ता था। तो कभी किसी निर्णय पर पहुंचने के लिए मैं दादी बृजेन्द्रा से पूछती थी कि दादी क्या करना चाहिए ? तो दादी कहती थी कि बड़ी दादी से पूछो। और जब मैं बड़ी दादी को फोन करती थी तो दादी कहती थी कि संतोष, तुम मेरे को फोन कर रही हो, तुम्हारे पास इतनी बड़ी दादी बैठी है तो उनसे ही पूछो। इस तरह दादियां एक दूसरे को बहुत सम्मान व रिगार्ड देती थीं। दादी छोटों को भी प्यार व रिगार्ड देकर आप समान बना देती थी। बड़ों के साथ बड़ा और छोटे बच्चों के साथ दादी भी छोटे बच्चे समान उनसे खेलने लग जाती थी।

ब्र.कु.संतोष

अद्भुत प्रशासिका थीं दादीजी

ब्र.कु.बृजमोहन

दादी जी यज्ञ के सभी भाई-बहनों को यज्ञ की योग्यतम् अमूल्य निधि समझ कर उनसे बहुत ही मधुरता से स्नेहयुक्त व्यवहार करती थीं। वह प्रत्येक आत्मा को विशेष एवं योग्य समझ आत्मिक दृष्टि से देखती थीं। दादी जी कभी भी किसी आत्मा की कमजोरी को न देख सभी को उत्साहित करती रहती थीं और उन सभी के विशेषताओं की सदैव प्रशंसा करती रहती थीं। मधुबन में कभी भी कोई मेहमान आता था तो उसकी सुख-सुविधा का पूरा ध्यान रखती थीं। उनका सदैव उद्देश्य रहता था कि वह पूर्ण रूप से सन्तुष्ट होकर जायें। वह यज्ञ के सभी भाई-बहनों की आध्यात्मिक पालना के साथ-साथ शारीरिक रूप से भी स्वस्थ बनाये रखने की पालना करती थीं। वह सदैव स्वयं को आध्यात्मिक परिवार का मुखिया समझ कर सभी के साथ सद्भावना व स्नेह युक्त व्यवहार करती थीं। संस्था की मुख्य प्रशासिका होते भी दादी में जरा भी अभिमान नहीं था। वह सदैव ध्यान रखती थीं कि बाबा के कार्य में कहीं कोई कमी न रह जाये और साथ-साथ सभी को भी इसके लिये उत्साहित करती रहती थीं। वह यज्ञ के जटिल से जटिल कार्यों को भी पूर्ण विश्वास व समर्पण भावना के कारण सदैव मुस्कुराते हुए सहजता से कर लेती थी। वह एक अद्भुत आध्यात्मिक विश्वदूत थीं। उन्होंने विश्व के अनेकानेक स्थानों का भ्रमण कर आत्माओं को आध्यात्मिकता व आत्मिक स्नेह की अनुभूति कराई। दादी जी ने परमात्मा का परिचय व विश्व में शांति स्थापित होने का पैगाम दिया।

दादी जी के साथ संस्था की वर्तमान मुख्य प्रशासिका दादी जानकी।

सबको माँ समान पालना दी

जब बाबा ने यज्ञ की स्थापना के समय ओम निवास बनवाया, उसमें 80 बच्चों के लिए लौकिक व अलौकिक पालना की व्यवस्था करवाई। मैं उस समय सात वर्ष की थी। बाबा ने कहा कि इन पवित्र पौधों को सम्भालने के निमित्त केवल पवित्र कन्याएं होंगी। तो पांच कन्याओं को दादी प्रकाशमणि, दादी चन्द्रमणि, दादी शान्तामणि, मिट्ठू दादी और एक बहन को निमित्त बनाया। बड़ी दादी ने चौदह वर्ष की आयु में ही माँ की तरह, शिक्षिका की तरह बेहद स्नेह से पालना की। सदा बाबा के डायरेक्शन अनुसार ही बड़ी दादी हर कार्य और सेवा इतने दिल से करती थी कि सबको प्रेरणा मिलती थी उनके जैसा बनने की। दादी सदा ही अचानक फोन करती थी, कमलमणि, दादी तुम्हारे पास अभी आ रही है। और बहुत हक से, प्यार से दादी यहां आते थे और नई नई प्रेरणाएं और अपनी शुभभावनाएं, दिल की दुआएं देकर जाते थे। दादी सदा ही हँसाते और बहलाते थे। उमंग-उत्साह बढ़ाकर दादी अपने से भी आगे बढ़ने के लिए हमको प्रेरित करती। बचपन से ही दादी की पालना, दिल का स्नेह, वरदानी बोल और दृष्टि हम कभी नहीं भूल सकते। वाह बाबा ! वाह दादी !

दादी कमलमणि

दादीजी का प्रशासन प्रेमपूर्ण था

ब्र.कु.ओमप्रकाश

प्राय: प्रशासन में कार्यकर्ताओं को सुचारू रूप से काम कराने हेतु दबाव और भय जरूरी होता है परंतु दादी जी ने कभी भी अपने जीवन में किसी को डांटा नहीं और सबको प्यार से सम्मान देकर चलाया। इस प्रकार उनके प्रेम के प्रशासन में सब पूरी लगन से एवं जिम्मेवारी से काम करते थे। पांचों महाद्वीपों में हजारों सेवाकेंद्रों की सचमुच में वह अद्भुत मुख्य प्रशासिका थी। दादी में एक बड़ी विशेषता थी कि उन्होंने जीवन में कभी भी झूठ नहीं बोला और न ही इसका सहारा लिया। उनके अंदर निर्भयता का गुण बहुत ही विशेष था। संस्था के अंदर अनेक बड़े-बड़े विघ्न आये परंतु दादीजी कभी डोलयमान या भयभीत नहीं हुई। और अपने आत्मबल से उन्होंने सारे विघ्नों पर जीत पाई। दादी जी के नेतृत्व में विश्व के कोने-कोने में सेवाकेंद्रों की स्थापना हो गई। विश्व की सर्वोच्च संस्था संयुक्त राष्ट्र तक दादीजी ने ब्रह्माकुमारीज़ को पहुंचाया।

निरहंकारिता की मूरत दादी जी

ब्र.कु.चक्रधारी

दादी जी प्रारंभ से ही यज्ञ में मिनी मम्मा के नाम से जानी जाती थी। मम्मा के साथ दादीजी ने भी माँ के रूप में पालना देने का सर्वोत्तम पार्ट बजाया।

दादीजी की निरहंकारिता की एक झलक इस घटना से अनुभव में आती है कि एक बार किसी कार्यक्रम में गेट पर खड़े भाई ने एसडीएम को कार्यक्रम में अंदर प्रवेश होने नहीं दिया। तो वे काफी नाराज हो गये और वहां एक बहस का वातावरण बन गया। तभी वहां से दादीजी गुजर रही थीं उन्हें जब बात का पता चला तो उन्होने एसडीएम को बड़े प्यार से सम्मान पूर्वक बात की और उस गेट पर खड़े भाई की तरफ से माफी मांगते हुए उन्हें अंदर चलने को कहा। एसडीएम को जब पता चला कि वे इस संस्था की मुख्य प्रशासिका हैं तो वह उनके समक्ष नतमस्तक हो गया। दादीजी नम्रता व प्रेमपूर्ण व्यक्तित्व से सबको अपना बना लेती थीं। एक बार रशिया के नौ भाई-बहनों का ग्रुप धन की वजह से भारत आने में असमर्थ था तो दादीजी ने उनके आने जाने की टिकट का खर्च देकर उनकी भारत आने की आश पूर्ण की।

दादीजी की कथनी व करनी एक समान थी

दादी जी एक ऐसी महान विभूति थीं जिनका जीवन ही एक खुली किताब बना, जिनका जीवन ही सन्देश बना, जिनके जीवन का एक-एक पन्ना पलटने से ही उमंग, उत्साह और साहस का स्वीच ऑन हो जाता है। कथनी और करनी को एक समान बनाकर दादी जी ने जीवन को, हर प्रश्न का उत्तर देने वाली डिक्शनरी बनाया। दादी जी सादगी और स्वच्छता की श्रृंगारी हुई प्रतिमूर्ति थीं। जीवन को त्याग और तपस्या से भरपूर कर ऐसा लाइट, माइट हाऊस बनाया जिससे चारों और प्रकाश ही प्रकाश बिखरने लगा। उसी प्रकाश से आज यह विश्व विद्यालय प्रकाशित हो रहा है। उनके नयनों में रूहानियत, वाणी में मधुरता, कर्मों में कुशलता थी।

ड्रामा अनुसार बाबा ने मुझे पटना सेवा के लिए भेजा। उस समय बाबा सेवा के हिसाब से ''सिन्धी गीता'' लिखना चाहते थे, जिसके लिए बाबा का बुलावा हुआ और दादी जी मधुबन गयीं। मुझे पटना के बहुत से भाई-बहनों द्वारा दादी जी के जीवन की अद्भुत शक्ति, गुण और विशेषताओं के बारे में सुनने को मिला।

ब्र.कु.राज

पटना में महासम्मेलन का आयोजन किया गया था, तब दादी जी के और समीप आने का चांस मिला। दादी से बहुत अपनेपन की महसूसता हुई। दादीजी की एक-एक करनी से मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला। आज भी उनका व्यक्तित्व हमारे लिए प्रेरणास्रोत है।

पवित्रता की मूरत दादीजी

ब्र.कु.आशा

भोली दीदी हमेशा कहती थीं कि दादीजी ने सभी को हड्डी सुख दिया है। यज्ञ वत्सों की आरंभ से ही पालना करने में ब्रह्मा बाबा व मम्मा का हर कदम पर साथ दिया था दादीजी ने। दादीजी की निस्वार्थ, निश्छल, निर्मल व पवित्र भावनाएं सहज ही सर्व को प्रभावित करती थीं। वे अपनी निर्मलता से सहज ही विरोधी को भी बाबा का सहयोगी बना देती थीं। एक संत जो ब्रह्माकुमारी बहनों का काफी विरोध करते थे। उन्हें कहीं भी देखता तो मुंह फेर लेते थे।

दादीजी ने मधुबन में एक विशाल संत सम्मेलन में उन्हें भी आमंत्रित किया। दादीजी के तप व उनकी महानता का अनुभव करते ही वह दादीजी के समक्ष नतमस्तक हो गया। उसने भरी सभा में कहा कि क्या दादी मुझे अपने छोटे भाई के रूप में मुझे स्वीकार करेंगी। दादी ने सभा में उन्हें राखी मंगवाकर बांधी।